'SUNKUL- मार्ग दर्शन'

नि:शुल्क टेस्ट सीरीज

हिन्दी साहित्य का इतिहास- आदिकाल

(TEST-02)

01. समेलित कीजिए ?

(रचनाकार)	(पुस्तक)
(अ)स्वयंभू	1. ण्यकुमार चरिउ
(ब)देवसेन	2. भविष्यत कहा
(स)धनपाल	3. श्रावकाचार, दर्शनसार
(द)पुष्पदंत	4. रिट्ठणेमि चरिउ

(अ) अ-4 ब-2 स-3 द-1
(ब) अ-4 ब-3 स-2 द-1
(स) अ-4 ब-3 स-2 द-1
(द) अ-4 ब-3 स-1 द-2 (ब)

विशेष:-

⇨ स्वयंभू :-
1. स्वयंभू छंद
2. पउम चरिउ
3. रिट्ठणेमि चरिउ
4. हरिवंश पुराण
5. पंचमि चरिउ

देवसेन:-
1. श्रावकाचार
2. दुब्ब-सहाव-व्यास
3. लघुनय चक्र
4. दर्शनसार

पुष्पदंत:-
1. महापुराण
2. ण्यकुमार चरिउ
3. जसहरि चरिउ
4. नाग कुमार चरिउ

02. हिन्दी साहित्य का इतिहास व उसके रचनाकाल का असंगत क्रम छाँटिए -
(अ) सुन्दरी तिलक- 1869 ई.
(ब) तजकिरा-ई-शुअरा-ई-हिन्दी - 1911 ई.
(स) हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास- 1965 ई.
(द) हिन्दी साहित्य का नया इतिहास- 1969 ई. (ब)

⇨ मौलवी करीमुद्दीन कृत- 'तजकिरा-ई-शुअरा-ई-हिन्दी'- की रचना 1848 ई. में मानी जाती है।

⇨ कुछ विद्वान इसे 'गार्सा-द-तासी' के हिन्दी साहित्य के इतिहास 'इस्त्वार-द-ला-लितरेत्यूर एन्दुई (हिन्दी) एन्दुस्तानी (उर्दू)' 1838 ई. का उर्दू अनुवाद मानते हैं।
किसी भारतीय द्वारा उर्दू में लिखित हिन्दी और उर्दू का प्रथम इतिहास।
कुल 1004 कवियों का वर्णन हिन्दी के मात्र 62 कवि।

03. 'परमाल रासो' का 1865 ई. में 'आल्हाखण्ड' नाम से प्रकाशन किसने करवाया ?
(अ) चार्ल्स इलियट (ब) आचार्य शुक्ल
(स) डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त (द) मुनिजिन विजय (अ)

⇨ चार्ल्स इलियट
विशेष:- इसका सर्वप्रथम प्रकाशन 1865 ई.में फर्रूखाबाद के डिप्टी कमीश्नर चार्ल्स इलियट ने 'आल्हाखण्ड' नाम से करवाया। इसी आधार पर श्यामसुन्दर दास ने 'नागरी प्रचारिणी सभा' से इसका प्रकाशन 'परमाल रासो' नाम से करवाया। इसमें आला और उदल दो क्षत्रिय सामंतो की वीरता का वर्णन है।

04. आचार्य शुक्लानुसार कौन सिद्धों से अपनी अलग परम्परा बनाने के लिए पंजाब चले गये और वहाँ 'बालनाथ' कहलाये ?
(अ) जालंधर नाथ (ब)मत्स्येन्द्रनाथ
(स) गोरखनाथ (द)नागार्जुन (अ)

⇨ उत्तर- जालंधर नाथ।

05. प्रमुख जैन कवि व उनकी रचना से संबंधित असंगत कथन है ?
(अ) हेमचन्द्र- कुमारपाल चरित
(ब) सोमप्रभ सूरि- कुमारपालप्रतिबोध
(स) मेरुतुंग- प्रबंधचिंतामणि
(द) शारंगधर- प्राकृत पिंगल सूत्र (द)

⇨ उत्तर- प्राकृत पिंगल सूत्र शारंगधर का नहीं है। शारंगधर की दो रचनाएँ मानी जाती है- शारंगधर पद्धति, हम्मीररासो।

06. ''अपभ्रंश की रचनाओं की परम्परा यहीं समाप्त होती है।'' आचार्य शुक्ल का यह कथन किसके लिए आया है ?
(अ)हम्मीररासो (ब)प्रबंधचिंतामणि
(स)उक्ति व्यक्ति प्रकरण (द)परमाल रासो (अ)

⇨ उत्तर- हम्मीररासो।

07. ''माना कि रासो इतिहास नहीं है, काव्यग्रन्थ है पर काव्यग्रन्थों में सत्य घटनाओं में बिना किसी प्रयोजन कोई उलटफेर नहीं किया जाता। जयानक का 'पृथ्वीराज विजय' भी तो काव्य ग्रन्थ है उसमें क्यों घटना और नाम सही है।''
उपर्युक्त कथन किसका है?
(अ)आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ब)हजारीप्रसाद द्विवेदी
(स)श्यामसुंदर दास (द)मिश्रबंधु (अ)

⇨ उत्तर- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

08. पृथ्वीराज रासो के संस्करण से संबंधित असंगत कथन है -
(अ) प्रथम संस्करण नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा सम्पादित है जिसकी हस्तलिखित प्रति उदयपुर के संग्रहालय में सुरक्षित है। इस संस्करण में 69 समय तथा 16306 छन्द है।
(ब) द्वितीय संस्करण में 7000 छंद है इसका प्रकाशन नहीं हुआ है इसकी प्रतियाँ अबोहर व बीकानेर में सुरक्षित है जो 17वीं शताब्दी की लिखी है।
(स) तृतीय संस्करण लघु संस्करण है जिसमें 19 खण्ड और 3500 छंद है इस संस्करण की हस्तलिखित प्रतियाँ अजमेर में सुरक्षित है।

SUNKUL मार्गदर्शन

(द) चौथा संस्करण सबसे छोटा है जिसमें केवल 1300 छंद है डॉ. दशरथ शर्मा इसे ही मूल रासो मानते हैं। (स)

⇨ तृतीय संस्करण लघु संस्करण है जिसमें 19 खण्ड और 3500 छंद है इस संस्करण की हस्तलिखित प्रतियाँ बीकानेर में सुरक्षित है।

09. रामनरेश त्रिपाठी ने अपनी रचना 'कविता कौमुदी' में भारतेन्दु के पूर्व तक कितने कवियों की जीवनी रचनाओं सहित संकलित की है ?

(अ) 70 (ब) 89
(स) 113 (द) 139 (ब)

⇨ 89

विशेष:-

⇨ कविता कौमुदी- 8 भाग (सन् 1917 ई.)

10. ''नाद न बिन्दु न रवि न ससि मण्डल,
चिअराअ सहाबे मूकल ।
उजु रे उजु छाँडि मा लेहु रे बंक,
निअहि बोहि मा जाहुरे रंक।।'' पंक्तियों के रचयिता है?

(अ) लुइपा (ब) सरहपा
(स) शबरपा (द) शारंगधर (ब)

विशेष:-

सरहपा के अन्य पद-

1. घोर-अंधारे-चंदमणि, जिमि उज्जोअ करेई।
2. जह मन पवन न संचरइ, रवि शशि नाह पवेश।
3. पण्डिअ सअल संत बक्खाणइ।

11. ''दसवीं से चौदहवीं शताब्दी का काल जिसे हिन्दी का आदिकाल कहते हैं। भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश का ही बढावा है। इसी अपभ्रंश के बढ़ाव को कुछ लोग उत्तरकालीन अपभ्रंश कहते हैं और कुछ लोग पुरानी हिन्दी।''
उपर्युक्त कथन है?

(अ) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ब) डॉ. नगेन्द्र
(स) रामचन्द्र शुक्ल (द) रामविलास शर्मा (अ)

12. ''बारहवीं शताब्दी तक निश्चित रूप से अपभ्रंश भाषा ही पुरानी हिन्दी के रूप में चलती थी, यद्यपि उसमें नए तत्सम शब्दों का आगमन शुरू हो गया।''
उपर्युक्त कथन किस आलोचक का है?

(अ रामचन्द्र शुक्ल (ब) बच्चन सिहं
(स) हजारी प्रसाद द्विवेदी (द) मिश्रबंधु (स)

13. ''जहि मन पवन न संचरई, रवि ससि नोहि प्रवेश।
तहि बट चित बिसास करु, सरेहे कहिअ उवेष।।''
पद के रचयिता है?

(अ) शबरपा (ब) सरहपा
(स) कण्हपा (द) लुइपा (ब)

14. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किस रासो ग्रन्थ की भाषा को 'बिल्कुल बेठिकाने की भाषा' कहा है ?

(अ) बीसलदेव रासो (ब) खुमाण रासो
(स) पृथ्वीराज रासो (द) पृथ्वीराज विजय (स)

⇨ उत्तर- पृथ्वीराज रासो।

15. ''मनहु कला ससभान कला सोलह सो बन्निय।
बाल बैस, ससि ता समीप अमृत रस पिन्निय।।''
उपर्युक्त पद्य किस रासो ग्रन्थ से उद्धृत है ?

(अ) पृथ्वीराज रासो (ब) परमाण रासो
(स) खुमाण रासो (द) विजयपाल रासो (अ)

⇨ उत्तर- पृथ्वीराज रासो।

16. अमीर खुसरो के गीतों और दोहों की भाषा है ?

(अ) खड़ी बोली (ब)अवधी
(स) ब्रज (द)कन्नौजी (स)

⇨ उत्तर- ब्रज।

विशेष :-

खुसरो की हिन्दी रचनाओं में दो प्रकार की भाषा पायी जाती है। ठेठ खड़ी बोली-पहेलियों, मुकरियों और दोसुखनों में ही मिलती हैं। यद्यपि उनमें भी कहीं-कहीं ब्रजभाषा की झलक है, पर गीतों और दोहों की भाषा ब्रज या मुख प्रचलित काव्य भाषा ही है। (हिन्दी साहित्य का इतिहास-शुक्ल पृ.सं. 88)

17. सरहपा का समय माना गया है?

(अ) 769 ई० (ब) 840 ई०
(स) 820 ई० (द) 781 ई० (अ)

विशेष:- सरहपा- 769 ई० लुइपा-773 ई०
शबरपा- 780 ई० डोम्बिपा- 840 ई०
कण्डहपा- 843 ई०

18. ''गंगा जउँना माझे रे बहइ नाई,
ताहि बुडिलि मातंगि पोइआ लीले पार करई।।''
पंक्तियों के रचयिता है?

(अ) लुइपा (ब) डोम्बिपा
(स) कण्हपा (द) कुक्कुरिपा (ब)

19. ''भक्तिवाद पर सिद्धों का प्रभाव है। इनके साहित्य की सबसे बड़ी महत्त्वपूर्ण देन यह है कि आदिकाल की प्रामाणिक सामग्री प्राप्त हुई है।'' उपर्युक्त कथन किसका है?

(अ) डॉ. नगेन्द्र (ब) रामचन्द्र शुक्ल
(स) डॉ. बच्चन सिंह (द) हजारीप्रसाद द्विवेदी (द)

20. सोमप्रभसूरि द्वारा लिखित रचना है?

(अ)चंदनबालारास (ब) कुमारपाल प्रतिबोध
(स) स्थूलिभद्ररास (द) छन्दोनुशासन (ब)

21. सुमेलित कीजिए?

(रचनाकार)	(समय)
(अ) सुमतिगण	1. रेवंतगिरीरास
(ब) विजयसेन सूरि	2. शब्दानुशासन
(स) हेमचंन्द्र	3. स्थूलिभद्र रास
(द) जिनधर्मसूरि	4. नेमिनाथ रास

(अ) अ-4 ब-3 स-2 द-1
(ब) अ-1 ब-4 स-2 द-3
(स) अ-4 ब-1 स-2 द-3
(द) अ-4 ब-1 स-3 द-2 (स)

22. 'कीर्तिलता' एवं 'कीर्तिपताका' की भाषा है?

(अ) अपभ्रंश (ब) अवहट्ठ
(स) प्राकृत (द) ब्रज (ब)

विशेष:-

⇨ कीर्तिलत्ता- राजा कीर्ति सिंह का चरित्र चित्रण

➪ कीर्तिपताका- राजा शिवसिंह की विजयों का वर्णन

23. विद्यापति की किस रचना के लिए उन्हे 'अभिनव जयदेव' कहा जाता है?
(अ) विद्यापति पदावली (ब) कीर्तिलता
(स) कीर्तिपताका (द) उपर्युक्त सभी (अ)

24. ''आदिकाल नाम भ्रामक है इससे बाबा आदम के जमाने का आभास होता है।'' उपर्युक्त कथन है?
(अ) आचार्य शुक्ल (ब)विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(स) डॉ. बच्चन सिंह (द) डॉ. नगेन्द्र (स)

25. विद्यापति पदावली में पद है?
(अ)935 पद (ब) 936 पद
(स) 934 पद (द) 938 पद (ब)

विशेष:-
शिव, दुर्गा, गौरी, गंगा की भक्ति के 936 पद-
➪ राधा-कृष्ण की भक्ति के पद
➪ श्रृंगार के संयोग व वियोग दोनों पक्षों का चित्रण
➪ बच्चन सिंह- ''देशभाषा में लिखी प्रथम रचना विद्यापति की पदावली है, अत: हिन्दी का प्रथम कवि विद्यापति को ही माना जाना चाहिए।''
➪ बच्चन सिंह-''विद्यापति की कविता का स्थापत्य श्रृंगारिक है। उसे आध्यात्मिक कहना खजुराहों के मंदिरों को आध्यात्मिक कहना है।''
➪ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल- ''आध्यात्मिक रंग के चश्में आजकल बहुत सस्ते हो गए हैं, उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों ने 'गीत गोविन्द' को आध्यात्मिक संकेत बताया है वैसे ही विद्यापति के इन पदों को भी।

26. कौनसा उपनाम विद्यापति का नहीं है?
(अ)मैथिली कोकिल (ब)कवि शेखर
(स) राज शेखर (द) अभिनव जयदेव (स)

27. विद्यापति को रहस्यवादी किसने कहा?
(अ) बच्चन सिंह ने (ब) जार्ज ग्रियर्सन ने
(स) रामचन्द्र शुक्ल ने (द) डॉ. नगेन्द्र ने (ब)

विशेष:-
वैष्णभक्त- श्यामसुन्दर दास, बृजनंदन सहाय, जार्ज ग्रियर्सन
रहस्यवादी- जार्ज ग्रियर्सन
श्रृंगारीकवि- रामचन्द्र शुक्ल, रामकुमार वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, हरप्रसाद शास्त्री, बच्चन सिंह

28. 'ढोला मारु रा दूहा' के रचयिता है?
(अ) राम सिंह (ब) कुशल लाभ
(स) कवि कल्लोल (द) भट्ट केदार (स)
व्याख्या: शुक्लानुसार 'ढोला मारु रा दूहा' में 1561 ई. में कुशललाभ ने कुछ पद जोड़े।
नगेन्द्र अनुसार 'ढोला मारु रा दूहा' में 17वीं में कुशलराय वाचक ने कुछ पद जोड़े।

29. डॉ. नगेन्द्र के अनुसार किस इतिहासकार ने अपने इतिहास ग्रंथ में अपभ्रंश साहित्य को हिन्दी साहित्य से अलग मानकर उसे पूर्व पीठिका के रूप में प्रस्तुत किया है?
(अ) गणपतिचन्द्र गुप्त (ब) डॉ. धीरेन्द्र वर्मा
(स) डॉ. नगेन्द्र (द) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (द)

30. 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया गया है?
(अ) छंदो का प्रयोग (ब) आलंकारिक भाषा
(स) दोनो (द) कोई नही (ब)

विशेष:-
रचनाकार- दामोदर भट्ट
➪ उक्ति-व्यक्ति प्रकरण 12 वीं शती (1154 ई.)
➪ पाँच प्रकरण
➪ सुनीति कुमार चटर्जी ने इसकी भाषा को प्राचीन कोसली (अवधी) कहा है।
➪ दामोदर भट्ट काशी नरेश गोविन्द चन्द्र के सभापण्डित थे।

31. ऐतिहासिक चेतना व पूर्व परम्परा की दृष्टि से हिन्दी के सबसे सशक्त इतिहासकार है?
(अ) आचार्य शुक्ल (ब) डॉ. बच्चन सिंह
(स) राहुल सांकृत्यायन (द) हजारी प्रसाद द्विवेदी (द)

33. अपभ्रंश को 'पुरानी हिन्दी' नहीं मानने वाले इतिहासकार थे?
(अ)चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (ब) आचार्य शुक्ल
(स) राहुल सांकृत्यायन (द) हजारी प्रसाद द्विवेदी (द)

33. नाथ सम्प्रदाय के विभिन्न नाम-सिद्धमत,सिद्ध मार्ग,योग मार्ग योग सम्प्रदाय, अवधूतमत, अवधूत सम्प्रदाय किस विद्वान ने दिए?
(अ)डॉ.नगेन्द्र (ब) आचार्य शुक्ल
(स) डॉ.बच्चन सिंह (द) हजारी प्रसाद द्विवेदी (द)

34. हिन्दी का संतकाव्य पूर्ववती सिद्धों व नाथपंथियों के साहित्य का सहज विकसित रूप है।'' कथन किनका है?
(अ) हरप्रसाद शास्त्री (ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(स) गुलेरी जी (द) आचार्य शुक्ल (ब)

35. ''प्रेमाख्यान काव्य परम्परा भी संस्कृत, प्राकृत,अपभ्रंश की काव्य परम्पराओं पर आधारित है।'' ऐसा मानने वाले साहित्यकार है?
(अ) शिव सिंह सेंगर (ब) डॉ. नगेन्द्र
(स) हजारी प्रसाद द्विवेदी (द) हरप्रसाद शास्त्री (स)

36. ''हिन्दू समाज में नीचे से नीचे समझी जाने वाली जाति भी अपने से नीची एक ओर जाति ढूँढ लेती है।'' कथन है?
(अ) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ब) डॉ. रामकुमार वर्मा
(स) डॉ. बच्चन सिंह (द) रामवृक्ष बेनीपुरी (अ)

37. नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी साहित्य का बृहत-इतिहास' के 'प्रथम भाग' का शीर्षक है-
(अ)हिन्दी भाषा का विकास
(ब) हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास
(स) हिन्दी साहित्य का अभ्युत्थान
(द) हिन्दी साहित्य की पीठिका (द)

➪ उत्तर:- हिन्दी साहित्य की पीठिका

विशेष:-
नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास' के 'प्रथम भाग' का शीर्षक, हिन्दी साहित्य की पीठिका है। नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी द्वारा प्रकाशन क्षेत्र में पूर्ण की गयी तीन सबसे बड़ी परियोजनाओं में 'हिन्दी शब्दसागर' और

'हिन्दी विश्वकोष' के साथ 'हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास' प्रस्तुत करने की परियोजना भी थी जिसे सभा ने सन् 1953 ई. में स्वीकार किया। इसके प्रारम्भिक एवं अंतिम दो-दो खण्ड (पहला, दूसरा, पंद्रहवा एवं सोलहवाँ) साहित्येतिहास से संबंधित विषयों पर केन्दित है एवं बीच में कुल 12 खण्डों (तीसरे से चौहदवें) में प्रत्यक्षत: हिन्दी साहित्य का इतिहास निबद्ध है। इसके प्रथम भाग का शीर्षक 'हिन्दी साहित्य की पीठिका' तथा द्वितीय भाग का शीर्षक 'हिन्दी भाषा का विकास' है।

38. कौन सा विवरण सही नहीं है?

(अ) गार्सा-द-तासी ने अपने इतिहास ग्रंथ में कवियों को कालक्रमानुसार प्रस्तुत किया है।

(ब) 'शिवसिंह सरोज' में लगभग एक हजार कवियों का जीवन-चरित उनके कविताओं के उदाहरण सहित्य प्रस्तुत किया गया है।

(स) जॉर्ज ग्रियर्सन के इतिहास-ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है।

(द) जॉर्ज ग्रियर्सन ने कवियों और लेखकों को कालक्रमानुसार वर्गीकृत किया है। (अ)

विशेष:-

⇨ उपर्युक्त विवरण गार्सा-द-तासी के इतिहास ग्रंथ 'इस्त्वार द लॉ लितरेत्युर ऐंदुई-ए-ऐंदुस्तानी' के संबंध में सही नहीं है। गार्सा-द-तासी के ग्रंथ को उर्दू-हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी साहित्य का सर्वप्रथम इतिहास ग्रंथ माना जाता है। इसका पहला संस्करण दो भागों सन् 1839 ई. तथा 1847 ई. में वर्णानुक्रम पद्धति में प्रकाशित हुआ।

39. 'भारतीय साहित्य की भूमिका' के लेखक है ?

(अ) दूधनाथ सिंह (ब) रामदरश मिश्र

(स) रामविलास शर्मा (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं (स)

⇨ उत्तर- रामविलास शर्मा

विशेष:-

'भारतीय साहित्य की भूमिका' के लेखक 'रामविलास शर्मा' हैं। इनकी अन्य पुस्तकें हैं- 'भारतीय सौन्दर्य बोध और तुलसीदास', 'लोक जागरण और हिन्दी साहित्य', 'परम्परा का मूल्याकंन' आदि। दूधनाथ सिंह ने 'सपाट चेहरे वाला आदमी' (कहानी संग्रह) निराला: आत्महन्ता आस्था (आलोचना) आदि लिखा है।

40. ''इस संबंध में इसके अतिरिक्त और कुछ कहने की जगह नहीं कि यह पूरा ग्रंथ वास्तव में जाली है।'' 'पृथ्वीराजरासो' विषयक यह स्थापना किसकी है ?

(अ) रामचन्द्र शुक्ल (ब) कविराज श्यामलदास

(स) डॉ. बूलर (द) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (अ)

⇨ उत्तर:- रामचन्द्र शुक्ल

विशेष:- 'पृथ्वीराजरासो' विषयक उपर्युक्त स्थापना रामचन्द्र शुक्ल की है। सर्वप्रथम 'डॉ. वूलर' ने 1875 ई. में कश्मीरी कवि जयानक द्वार रचित 'पृथ्वीराज विजय' (12 सर्ग में रचित संस्कृत महाकाव्य) के आधार पर पृथ्वीराजरासो को अप्रामाणिक घोषित किया। इसी के बाद 'पृथ्वीराजरासो' को प्रामाणिकता को लेकर विद्वानों के 3 वर्ग बन गये।

⇨ अप्रामाणिक मानने वाले विद्वान:-

1. डॉ. वूलर 2. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
3. आचार्य रामचन्द शुक्ल 4. मुंशी देवी प्रसाद
5. कविराज श्यामलदास

⇨ प्रामाणिक मानने वाले विद्वान:-

1. श्यामसुंदर दास
2. कर्नल टॉड
3. मिश्र बंधु
4. मोहनलाल विष्णु लाल पंड्या
5. मथुरा प्रसाद दीक्षित

⇨ अर्द्धप्रामाणिक मानने वाले विद्वान:-

1. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी 2. डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी
3. डॉ. दशरथ शर्मा

⇨ सम्पादन- मोहन लाल विष्णु लाल पाण्डया
- श्यामसुंदर दास

⇨ पृथ्वीराज रासोके 30 हजार छंदों का अंग्रेजी अनुवाद कर्नल टॉड ने किया था।

अप्रामाणिकता ट्रिक-

⇨ 'मुंशी देवी प्रसाद वूलर ने ओझा शुक्ल वर्मा को कविराज से अधिक अप्रामाणिक माना है।'

41. ''इस ग्रंथ में शृंगार की ही प्रधानता है, वीर रस का किंचित् आभास मात्र है।''

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की यह मान्यता किस ग्रंथ के संदर्भ में है ?

(अ) पृथ्वीराजरासो (ब) बीसलदेवरासो

(स) खुमाणरासो (द) विजयपालरासो (ब)

⇨ उत्तर:- बीसलदेवरासो?

विशेष:-

⇨ रामचन्द्र शुक्ल की यह मान्यता 'बीसलदेवरासो' के संदर्भ में है। अपने ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (1929 ई.) के आदिकाल के प्रकरण-3 में 'देशभाषा काव्य उपशीर्षक' के अन्तर्गत शुक्ल जी मानते हैं कि नरपति नाल्ह, कवि विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) का समकालीन था। कदाचित् यह राजकवि था। इसने 'बीसलदेवरासो' नामक एक छोटा सा ग्रंथ लिखा था।

42. ''वे सांप्रदायिक शिक्षा मात्र हैं, अत: शुद्ध साहित्य की कोटि में नहीं आ सकती।'' सिद्धों, नाथों, योगियों की रचनाओं के विषय में यह किसका मत है?

(अ) जॉर्ज ग्रियर्सन (ब) डॉ. नगेन्द्र

(स) रामचन्द्र शुक्ल (द) मिश्रबंधु (स)

⇨ उत्तर:- रामचन्द्र शुक्ल

विशेष:-

⇨ आचार्य रामचन्द शुक्ल का मानना है कि ''सिद्धों,नाथों और योगियों की रचनाएँ तांत्रिक विधान, योगसाधना, आत्मनिग्रह, भीतरी चक्रों, अंतर्मुख साधना के महत्त्व इत्यादि की साम्प्रदायिक शिक्षा मात्र है, जीवन की स्वाभाविक अनुभूतियों और दशाओं से उनका कोई संबंध नहीं। अत: वे शुद्ध साहित्य के अन्तर्गत नहीं आती। उनको उसी रूप में ग्रहण करना चाहिए जिस रूप में ज्योतिष, आयुर्वेद आदि के ग्रंथ।''

43. आदिकालीन हिन्दी कवि अमीर खुसरो विषयक कौन-सा तथ्य सही नहीं है ?

(अ) उनकी पहेलियाँ, मुकरियाँ और दो सुखने हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध हैं।

(ब) उनकी रचनाओं में खड़ीबोली काव्यभाषा बनने का प्रयास कर रही थी।

(स) उन्होंने जनजीवन के साथ घुलमिलकर काव्यरचना की है।

(द) उनका लक्ष्य जनता को धर्मोपदेश देना मात्र था। (द)

⇨ उत्तर:- उनका लक्ष्य जनता को धर्मोपदेश देना मात्र था।

विषय:-

⇨ अमीर खुसरो का जन्म सन् 1253 ई. में आधुनिक एटा (उत्तरप्रदेश) के पटियाली गाँव में माना जाता है।

⇨ इनकी पहेलियाँ, मुकरियाँ और दो सुखने हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध है।

⇨ उन्हें 'खड़ी बोली' का प्रथम कवि माना जाता है इन्हें 'तूती-ए-हिन्द' या 'हिन्द का तोता' कहा जाता है इन्हें 'सितार' के आविष्कार का श्रेय दिया जाता है।

44. ''अपभ्रंश के कवियों को विस्मरण करना हमारे लिए हानि की वस्तु है। यही कवि हिन्दी-काव्य-धारा के प्रथम स्रष्टा थे।'' यह कथन किसका है ?

(अ) राहुल सांस्कृत्यायन (ब) मिश्रबंधु

(स) शिवसिंह सेंगर (द) हजारीप्रसाद द्विवेदी (अ)

⇨ उत्तर:- राहुल सांस्कृत्यायन

विषय:-''अपभ्रंश के कवियों को विस्मरण करना हमारे लिए हानि की वस्तु है। यही कवि हिन्दी काव्य धारा के प्रथम स्रष्टा थे।''

45. निम्नलिखित पंक्तियों को उनके रचयिताओं से सुमेलित कीजिए?

(सूची-I)	(सूची-II)
(अ) नगर बाहिरे डोंबी तोहरि कुड़िया छाइ	1. लुहिपा
(ब) काआ तरुवर पंच बिड़ाल	2. कण्हपा
(स) कडुवा बोल न बोलिस नारि	3. खुसरो
(द) मोरा जोबना नवेलरा भयो है गुलाल	4. सरहपा

(अ) अ-2 ब-1 स-4 द-3

(ब) अ-1 ब-4 स-2 द-3

(स) अ-4 ब-1 स-2 द-3

(द) अ-4 ब-1 स-3 द-2 (अ)

46. आदिकाल में किस प्रकार का साहित्य लिखा जा रहा था ?

(अ)जन-जीवन से हटकर राजाओं की वीरता का अतिरंजित वर्णन।

(ब) कृष्ण-भक्ति पर आधारित काव्य

(स) निर्गुण की उपासना

(द) उपर्युक्त किसी प्रकार का नहीं (अ)

47 निम्नांकित में से सिद्ध साहित्य के विषय में कौन-सा कथन सत्य नहीं है ?

(अ) सिद्ध साहित्य का झुकाव सहज साधना की ओर है।

(ब) सिद्ध साहित्य के प्रथम कवि सरहपा हैं।

(स) सिद्ध साहित्य की रचना चर्यापदों तथा दोहों में हुई है।

(द) सिद्ध साहित्य का प्रणयन पिंगल भाषा में हुआ है।(द)

⇨ उत्तर:- सिद्ध साहित्य का प्रणयन पिंगल भाषा में हुआ है।

48. 'शब्दानुशासन' के लेखक हैं-

(अ) रामचन्द्र शुक्ल (ब) हेमचन्द्र

(स) सरहपाद (द) स्वयंभू (ब)

⇨ उत्तर:- हेमचन्द्र

विशेष:-

'शब्दानुशासन' हेमचन्द्र का व्याकरण ग्रंथ है। इसमें संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश तीनों का समावेश है।

49. 'खालिकबारी' किसकी रचना है ?

(अ)खालिक खलक (ब) रहीम

(स) अमीर खुसरो (द) अकबर (स)

⇨ उत्तर:- अमीर खुसरो

विशेष:-

⇨ अमीर खुसरो की रचनाएँ-खालिकारी (कोश ग्रंथ) दो सुखने, हालात-ए-कन्हैया, नजरान-ए-हिन्दी, पहेलियाँ, मुकरियाँ, गजल इत्यादि अमीर खुसरों (1253-1325) की रचना है।

⇨ अमीर खुसरो का वास्तविक नाम अबुल हसन था।

⇨ अमीर खुसरों निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे।

⇨ अमीर खुसरों खड़ी बोली के आदि कवि तथा प्रथम कवि कहे जाते हैं।

50. 'पीछे लागा जाइ था, लोक बेद के साथ।
आगे थे सतगुरु मिल्या, दीपक दीया हाथि।।
उक्त पंक्तियों में कबीर कहना चाहते हैं?

(अ) लोक और वेद का अनुसरण करने के कारण मैं परमतत्त्व से दूर था।

(ब) लोक और वेद की रूढ़िवादिता के परमतत्त्व के अभिज्ञान का मार्ग प्रशस्त किया।

(स) सतगुरु के ज्ञान रूपी प्रकाश में मैंने परमतत्त्व का साक्षात्कार किया

(द) सतगुरु ने दीपक थमाकर संसार में भटकने के लिए छोड़ दिया।

निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए:

(अ) अ और ब दोनों (ब) अ और स दोनों

(स) ब और स दोनों (द) ब और द दोनों (ब)